

हफ़्तावार रिसाला : 368
WEEKLY BOOKLET : 368

अरष ईने अत्तार

किस्त : 2

सफ़हात : 40

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के क़लम मुबारक से लिखी
हुई दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह्दादीसे करीमा



शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

کتاب پڑھنے کی دعا

دینی کتاب یا اسلامی سبق پڑھنے سے پہلے ذیل میں دی ہوئی دعا پڑھ لیجئے
ان شاء اللہ جو کچھ پڑھیں گے یاد رہے گا۔ دعا یہ ہے:

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

(مستطرف، 40/1)

(اول آخر ایک بار درود شریف پڑھ لیجئے)

نام رسالہ : اربعین عطار (قسط: 2)

مؤلف : شیخ طریقت، امیر اہل سنت، بانی دعت اسلامی، حضرت علامہ مولانا ابوبلال
محمد الیاس عطار قادری رضوی

پہلی بار : صفر المظفر ۱۴۴۶ھ، اگست 2024ء

تعداد : 40000 (چالیس ہزار)

ناشر : مکتبۃ المدینہ

التج

کسی اور کو یہ رسالہ چھاپنے کی اجازت نہیں ہے۔

کتاب کی طباعت میں نمایاں خرابی ہو یا صفحات کم ہوں یا بانڈنگ میں آگے پیچھے ہو گئے ہوں

تو مکتبۃ المدینہ سے رجوع کیجئے۔

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط

पहले इसे पढ़ें

दुआए अतार : या रब्बे मुस्तफ़ा ! जो कोई 40 सफ़हात का रिसाला “अरबईने अतार (क़िस्त : 2)” पढ़ या सुन ले उसे चलते फिरते, उठते बैठते हर वक़्त दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उसे मां बाप समेत बे हिसाब बरख़्श दे ।
امین بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जिस दरवाज़े से चाहो जन्नत में दाख़िल हो जाओ

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मेरी उम्मत के लिए जिस ने 40 हदीसों याद कीं जिन के ज़रीए अल्लाह पाक उन्हें नफ़अ अता फ़रमाए तो उस से कहा जाएगा : “जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहो दाख़िल हो जाओ ।” (العلل المتناهيّة لابن جوزي، 1/119، حديث: 162)

एक और हदीसे पाक में है कि अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिए दीन के मुतअल्लिक़ “चालीस हदीसों” याद कर लेगा तो अल्लाह पाक उसे क़ियामत के दिन अल्लिमे दीन की हैसियत से उठाएगा और क़ियामत के दिन मैं उस की शफ़ाअत करूंगा और उस के हक़ में गवाह होऊंगा । (مشكاة المصابيح، 1/68، حديث: 258)

चालीस अहादीस ही क्यूं ?

हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक की शर्ह में लिखते हैं : उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस इरशाद से मुराद लोगों तक चालीस अहादीस पहुंचाना है, चाहे वोह याद न हों और न ही उन का माना उसे मालूम हो । इसी हदीसे पाक की वजह से पहले के कई बड़े बड़े उलमाए किराम ने प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत का उम्मीदवार बनने और लोगों को बनाने के लिए अरबईनात (यानी चालीस अहादीस) तहरीर फ़रमाई । शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अपने बारे में अजिजी व इन्किसार करते हुए लिखते हैं : फ़कीर हक़ीर ने भी “चहल (यानी चालीस) अहादीस” का एक मजमूआ तालीफ़ किया है । इल्मे हदीस की ख़िदमत और तदरीस के बाद सब से पहले मुझे जिस तालीफ़ की तौफ़ीक़ अता हुई वोह “अरबईन” (यानी चालीस हदीसों) है । (اشعة الملتعات (اردو)، 1/517/1 لخصاً)

दुरूदो सलाम के मुतअल्लिक अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) लिखने की वजह

ऐ आशिक़ाने रसूल : चालीस अहादीस पहुंचाने की येह फ़ज़ीलत पाने के लिए सदियों से उलमाए किराम كَرَّمَهُمُ اللهُ (यानी अल्लाह पाक इन की तादाद ख़ूब बढ़ाए) चालीस अहादीस लिखते चले आए हैं। अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के क़लम से लिखी हुई चालीस अहादीस बनाम “अरबईने अत्तार (क़िस्त : 1)” पिछले साल रबीउल अव्वल शरीफ़ 1445 हिजरी मुताबिक़ सितम्बर 2023 के पुर मसरत (यानी खुशियों भरे) लम्हात में मन्ज़रे आम पर आई।

अल्लाह पाक की रहमत और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के करम से उसे काफ़ी मक़बूलियत और आशिक़ाने रसूल की तरफ़ से पज़ीराई मिली, देखते ही देखते 30 हज़ार की तादाद में छपने वाली येह किताब मक्तबतुल मदीना पर ख़त्म हो गई। लाखों आशिक़ाने रसूल ने इस की PDF से फ़ाइदा उठाया और मुतालाआ किया। तक़रीबन 50 हज़ार से भी ज़ियादा इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने येह चालीस अहादीस ज़बानी याद कर लीं जिस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उन्ही दिनों होने वाले एक मदनी मुज़ाकरे में फ़रमाया कि “मेरी ज़िन्दगी का येह पहला ऐसा रिसाला है जिसे यूं आशिक़ाने रसूल ने ज़बानी याद किया है।” إِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيمُ! आइन्दा साल रबीउल अव्वल शरीफ़ 1446 हिजरी में दुरूदो सलाम के मुतअल्लिक़ अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) लाने की कोशिश की जाएगी।

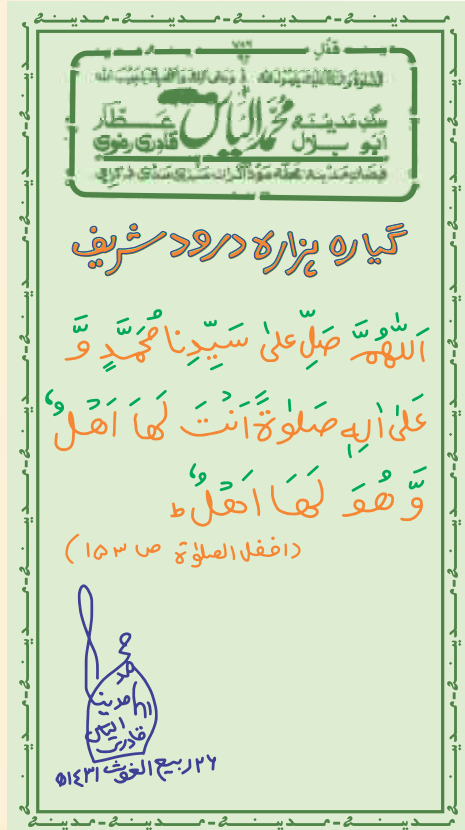
अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) कैसे लिखी गई ?

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम पढ़ना हमारे दिल का सुरूर और आंखों का नूर है, दुरूदो सलाम के बेशुमार फ़ज़ाइलो बरकात हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَلْمُحْمَدِيِّ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की पिछले साल की नियत और हदफ़ मुकम्मल हुवा और अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) आप के हाथों में है। यूं तो दुरूदो सलाम के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत का एक रिसाला बनाम “ज़ियाए दुरूदो सलाम” कई साल पहले मक्तबतुल मदीना से प्रिन्ट हो चुका है मगर अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) में मौजूद अहादीसे मुबारका उस के इलावा हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने पिछले साल रबीउल अव्वल शरीफ़ ही से इस काम को करने का इरादा फ़रमा लिया था फिर जब जब मौक़अ मिलता रहा आप अपने क़लम से वक़तन फ़ वक़तन अहादीसे मुबारका लिख कर इनायत फ़रमाते रहे, जिसे मख़्तूत (Original Hand writing)

और कम्पोजिंग में जम्अ कर के दावते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या (इस्लामिक रीसर्च सेन्टर) के शोबे “हफ़तावार रिसाला मुतालाआ” की तरफ़ से अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) की सूरत में पेश किया जा रहा है। मुबल्लिगीन व मुबल्लिगात दुरूदो सलाम के मुतअल्लिक़ इस अरबईने अत्तार (क़िस्त : 2) को भी ज़बानी याद करेंगे तो अपने बयानात वगैरा में तरगीब दिलाने नीज़ दुरूदो सलाम से अपनी ज़बानों को तर रखने में मदद मिलेगी।

अल्लाह पाक अमीरे अहले सुन्नत को दराज़िए उम्र बिल खैरो अफ़ियत अता फ़रमाए और आप का शफ़क़तो भरा साया हमारे सरो पर खैरो अफ़ियत के साथ सलामत बा करामत रखे। अल्लाह करीम! अपने फ़ज़लो करम से इस किताब को हमारे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ आप के वालिदैन और जिस जिस ने इस किताब पर काम किया उन सब के लिए बे हिसाब बख़्शिश और शफ़ाअते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़रीआ बनाए। أَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शोबा हफ़तावार रिसाला मुतालाआ



ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब

हज़रते इमाम हाफ़िज़ जलालुद्दीन अस्सुयूती अश्शाफ़ेई ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक का एक मरतबा पढ़ना ग्यारह हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है।

(أَفْضَلُ الصَّلَاةِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ، ص 153)

اللّٰهُ

مस्جِد میں آتے جاتے بارگاہہ ریشالہت میں سلام

إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمْ الْمَسْجِدَ فَلْيُسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي
أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَإِذَا خَرَجَ فَلْيُسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بَاعِدْنِي
مِنَ الشَّيْطَانِ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جب تم میں سے کوئی مسجد میں داخل ہو تو نبی
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ پر سلام بھیجے اور یوں عرض کرے : اے اللہ پاک ! میرے لیے اپنی
رحمت کے دروازے کھول دے ۔ اور جب مسجد سے نکلے ، تو نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ پر
سلام بھیجے اور یوں عرض کرے : اے اللہ پاک ! مجھے شیطان سے دور فرما ۔

(سنن کبریٰ للنسائی، 6/27، حدیث: 9918)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم : جب تم میں سے کوئی مسجد میں داخل ہو تو
نبی (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) پر سلام بھیجے اور یوں عرض کرے : اللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ
(یعنی : اے اللہ پاک ! میرے لیے اپنی رحمت کے دروازے کھول دے ۔) اور جب مسجد سے نکلے تو بھی
نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر سلام بھیجے اور یوں عرض کرے :

اللّٰهُمَّ بَاعِدْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ

صلوا على الحبيب
صلی اللہ علی محمد

24-6-6
میں نے اس کو
اپنی کتاب میں
لکھا ہے

الله

मुझ पर दुरूदे पाक भेजो

صَلُّوا عَلَيَّ وَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ وَقُولُوا: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِ مُحَمَّدٍ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

मुझ पर दुरूदे पाक भेजो और दुआ में ख़ूब कोशिश करो और कहो :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِ مُحَمَّدٍ -

(نسائي، ص 221، حديث: 1289)

فرمانِ آخري نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم: مجھ پر درود پاک بھیجو اور
دُعائی خوب کوشش کرو۔ اور کہو: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِ مُحَمَّدٍ -

کتاب
صالحہ نذیر
مکتبہ الشریف
۱۴۲۸ھ

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَبِيْب
صَلَّى اللهُ عَلَيَّ لِحْمَد

اللہ

رکعت ن کر سکنے والے کا دُرُودِ شَرِیْف

أَيُّمَا رَجُلٍ مُّسْلِمٍ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ صَدَقَةٌ فَلْيُقِلْ فِي دُعَائِهِ: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ فَإِنَّهَا زَكَاةٌ وَقَالَ: لَا يَشْبَعُ الْمُؤْمِنُ خَيْرًا حَتَّى يَكُونَ مُنْتَهَاهُ الْجَنَّةُ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “جس مسلمان کے پاس صدقا کرنے کو کچھ نہ ہو
 उसे चाहिए कि अपनी दुआ में येह कह लिया करे :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ

तो येह ज़कात है और मोमिन कभी भलाई से सैर नहीं होता यहां तक कि जन्नत उस का ठिकाना होती है ।”

(صحیح ابن حبان، 2/130، حدیث: 900)

شہد ہدیسی : جو شخص صدقا کرنے پر کددرت نہیں رکھتا اس کا رسوے پاک صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کے لیے اٹلااھ
 پاک سے رھمت کی دوا کرنا یا نی دُرودے پاک بھجنا اس کے لیے صدقا ہے ا (السرآع المنیر بشرآ جاع الصغیر، 2/232 ماخوذاً)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: جس مسلمان کے پاس صدقہ کرنے کو کچھ نہ ہو اسے چاہئے کہ
 اپنی دعا میں یہ کہ لیا کرے: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
 وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ۔ تو یہ زکوٰۃ ہے اور مومن کبھی بھلائی سے سیر نہیں ہوتا یہاں تک کہ
 جنت اس کا ٹھکانا ہوتی ہے۔

24-6-11
 ذوالحجہ 1432ھ
 صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 علیہ السلام

شَرَحِ حَدِيثٍ: جو شخص صدقہ کرنے پر قدرت نہیں رکھتا اس کا رسوے پاک صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 اللہ پاک سے رحمت کی دعا کرنا یعنی دُرودِ چپاک بھیجنا اس کے لیے صدقہ ہے۔

SADAQA



(اللہ)

جَمِینِ پَرِ غُومِنَہِ وَالَہِ فَرِشَتَہِ

اِنَّ اللّٰہَ مَلٰئِکَۃً سَیّٰحِیْنَ فِی الْاَرْضِ یُبَلِّغُوْنِیْ عَنْ اُمَّتِی السَّلَامَ

فرمانے مُسْتَفَا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : “جَمِینِ پَرِ کُحْخُ فَرِشَتَہِ غُومَتَہِ فِیرَتَہِ ہِیْنَ جَوِ مَہِری اُمْمَتِ کَا سَلَامِ مُدْجِ تَاکِ پَہُنْچَاتَہِ ہِیْنَ ا”

(الاحسان بتر تیب ابن حبان، 2/134، حدیث: 910)

فَرْمَانِ مَعْرُوفِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ”زَمِینِ پَرِ کُحْخُ فَرِشَتَہِ لُہْمَتَہِ پَہِرْتِہِ ہِیْنَ جَوِ صِیرِی اُصَّتِ کَا سَلَامِ مَجھُ تَاکِ پَہِنْچَاتَہِ ہِیْنَ“

اللہ جل جلالہ نے فرشتوں کو بھیجا ہے کہ ان کو سلام پہنچائیں۔

آپ عطا کیوں پریشان ہیں، بلا سے برتر بھی زبرد امان ہیں
اُن پہ رحمت و خاص کرتے ہیں، جو مسلمان سلام کہتے ہیں

صلو علی الحبیب
صلی اللہ علیہ وسلم



دुआ میں دुरूد شریف

اجْعَلُونِي فِي وَسْطِ الدُّعَاءِ وَفِي أَوَّلِهِ وَفِي آخِرِهِ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “مذہبے دُعا کے درمیان، شروع اور آخر میں رکھو۔”

(مصنف عبدالرزاق، 2/141، حدیث: 850)

(یعنی تم مذہب پر اپنی دُعا کے شروع میں، درمیان میں اور آخر میں دُعا بھیجو)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم :

”مجھے دعا کے درمیان، شروع اور آخر میں رکھو۔“

(یعنی تم مجھ پر دعا کے شروع میں درمیان میں اور آخر میں درود بھیجو)

مدینہ
ذوالحجہ ۱۴۴۵ھ
۲۶-۶
۲۰۰۱



اللَّهُ

वुजू के बाद दुरूदे पाक पढ़िए !

لَا أُضْوَعُ لِمَنْ لَمْ يُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “उस का वुजू नहीं जो नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक न पढ़े ।” (مجموع کبیر، 6/121، حدیث: 5698)

شہیہ ہدیہ : اَللّٰمٰمٰ اَبْدُرْرُفّٰ مُنٰوٰوِ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ لِيخْتِمْ هٰذَا : اِسْمُ شَاخِصٍ كَا وَجُوُّهُ مُكْمَلٌ فَجَلِلَتْ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ : اِسْمُ شَاخِصٍ كَا وَجُوُّهُ مُكْمَلٌ فَجَلِلَتْ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ : اِسْمُ شَاخِصٍ كَا وَجُوُّهُ مُكْمَلٌ فَجَلِلَتْ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ

(التبیر بشرح جامع الصغیر، 2/503)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم :

” اِسْمُ شَاخِصٍ كَا وَجُوُّهُ مُكْمَلٌ فَجَلِلَتْ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ”

” کھروڑ پک نہ پڑھے ۔ “

اللَّهُ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
- اللّٰمٰمٰ -



اللَّهُ



دُأ کی کبُولیخت کے جیادا لایک

مَسْنَدُ

إِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمْ أَنْ يَسْأَلَ، فَلْيَبْدَأْ بِالْبِدْحَةِ، وَالشَّئَاءِ عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ
لِيُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ لِيَسْأَلَ بَعْدُ فَإِنَّهُ أَجْدَرُ أَنْ يُنْجَحَ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “جب تم میں سے کوئی دُأ کرنے
کا اِرادہ کرے تو اسے چاہیے کہ اَللّٰہ پاک کی شان کے لایک اس کی تارِیْف کرے
فیر نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ پر دُروء بھیجے فیر اِس کے باء دُأ کرے کہ یہ دُأ کی
کبُولیخت کے جیادا لایک ہے ا”

(مُحْتَمَّ کبیر، 9/155، حدیث: 8780)

فرمانِ آخیری نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ”جب تم میں سے کوئی دُأ کرنے کا
ارادہ کرے تو اسے چاہئے کہ اللہ پاک کی شان کے لایک اُس کی تعریف کرے پھر
پنج پَر دُروء بھیجے پھر اس کے بعد دُعا کرے کہ یہ دُعا کی قبولیت کے

زیادہ لایک ہے۔“

مَسْنَدُ
مُحْتَمَّ کبیر
9/155
حدیث: 8780

صَلُّوا عَلَى الْجَبِيبِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



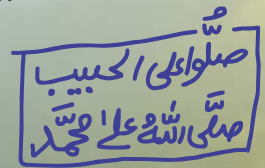
دुآءِ مُسْتَفَا اور 10 نেকیاں

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ بَلَّغْتَنِي صَلَاتَهُ، وَصَلَّيْتُ عَلَيْهِ، وَكُتِبَتْ لَهُ سِتُّ مِائَةِ حَسَنَةٍ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: "جس نے مُسْتَفَا پر دُرُودِ پاك پढا، اس كا دُرُودِ پاك مُسْتَفَا तक पहुंचेगा और मैं उस पर دُرُودِ بھجوں (yani دُأءِ رھمات كرں) گا اور اس كے اِلاوا اس كے ليے 10 نيكياں ليخي جائن گی۔

(مُجم اوسط، 1/446، حديث: 1642)

فرضاً آخري نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: جس نے مجھ پر دُرُودِ پاك پڑھا، اس كا دُرُودِ پاك مجھ تک پہنچے گا اور ميں اس پر دُرُودِ بھجيوں (يعني دُأءِ رحمت كرں) گا اور اس كے علاوہ اس كے ليے 10 نيكياں لکھی جائیں گی۔



اللہ

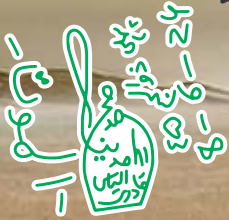
یہ دُروء بन्दے کی کُبر میں لے جاؤ !

مَا مِنْ عَبْدٍ يُصَلِّي عَلَى صَلَاةٍ إِلَّا عَرَجَ بِهَا مَلَكٌ حَتَّىٰ يَجِيءَ بِهَا وَجْهَ الرَّحْمَنِ عَزَّوَجَلَّ
فَيَقُولُ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ: اذْهَبُوا بِهَا إِلَى قَبْرِ عَبْدِي تَسْتَغْفِرُ لِقَائِهَا وَتَقْرَأُ بِهَا عَيْنُهُ

فرمانے آخِرِی نبی ﷺ : جب کوئی بندا مُذ پر دُروء شَرِیف پڑھتا ہے تو
فرشتا اس دُروء شَرِیف کو لے کر اُپر جاتا ہے اور اَللّٰہ پاک کی بارگاہ میں
پہنچتا ہے تو اَللّٰہ پاک فرماتا ہے : اِس دُروء کو مے بندے کی کُبر میں لے جاؤ یہ
دُروء اپنے پڑنے والے کے لیے اِسْتِغْفَار کرتا رہے گا اور اِس (خاص بندے) کی آنکھیں ٹنڈی ہوتی رہیں گی اُسے دیکھ کر
ٹنڈی ہوتی رہیں گی اُسے دیکھ کر

(الفردوس بمأثور الخطاب، 4/10، حدیث: 6026)

فرمانِ آخِرِی نبی ﷺ : جب کوئی بندا مجھ پر دُروء شَرِیف پڑھتا ہے تو فرشتہ
اِس دُروء شَرِیف کو لیکر اوپر جاتا ہے اور اللہ پاک کی بارگاہ میں پہنچاتا ہے تو اللہ پاک
فرماتا ہے : اِس دُروء کو میرے بندے کی قبر میں لے جاؤ یہ دُروء اپنے پڑنے والے کے لئے
اِسْتِغْفَار کرتا رہے گا اور اِس (خاص بندے) کی آنکھیں ٹنڈی ہوتی رہیں گی اُسے دیکھ کر



صلوٰۃ الجبیب
صلی اللہ علیہ وسلم

اللَّهُ

شفاقت واجب ہو गई

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ أَوْ سَأَلَ لِي الْوَسِيلَةَ حَقَّتْ عَلَيْهِ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ

فرمانے آخیری نبی ﷺ “جس نے مؤذ پر ایک بار درود شریف پڑھا یا اللہ پاک کی بارگاہ میں میرے لیے وسیلے کی دُعا کی بوجہ قیامت اس پر میری شفاقت ثابت ہو गई۔”

(فصل الصلاة على النبي لفتاوى إسماعيل بن إسحاق الأزدي، ص 147، حديث: 50)

فرمانِ آخری نبی ﷺ

جس نے مجھ پر ایک بار دُرود شریف پڑھا،
یا اللہ پاک کی بارگاہ میں میرے لیے وسیلے کی

دُعا کی بروز قیامت اُس پر میری شفاقت
ثابت ہوگی۔”

25-7-19
مدینہ منورہ
مکتبہ المدینہ
تذکرہ

صلوات علیٰ الحبيب
صلی اللہ علیٰ محمد

الله

ہجرت کوسر پر پہچان

لَيَرِدَنَّ الْحَوْضَ عَلَى أَقْوَامٍ مَا أَعْرَفُهُمْ إِلَّا بِكثْرَةِ الصَّلَاةِ عَلَيَّ

فرمانے اآخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: "ہجرت کوسر پر مجھے ایسی قومیں ملیں گی جنہیں میں بہت زیادہ دُرود پاک پڑھنے کے سبب ہی پہچانوں گا۔"

(القول البدیع، ص 264)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: "حوضِ کوسر پر مجھے ایسی قومیں ملیں گی جنہیں میں بہت زیادہ دُرود پاک پڑھنے کے سبب ہی پہچانوں گا۔"

بسم اللہ الرحمن الرحیم
صلى الله عليه وآله وسلم
الحسين -
10-01-2011

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

صلى الله عليه وآله وسلم

الله

ایک گولام آجاڈ کلا

مَنْ سَلَّمَ عَلَيَّ عَشْرًا فَكَانَتْ بَا عَطَقَ رَقَبَةً

فرمانه آخبره نبه صلي الله عليه وآله وسلم : "جس نه مبلل ٲر دس (10) بار سالام بهجا جوها उस نه एक गर्दन (यानी गोलाम) को आजाड किया" (الشفاء، 2/76)

فرمان آخري نبه صلي الله عليه وسلم : "جس نه به ٲر دس بار سالام بهجا جوها اس نه ايك گردن (يعني غلما) کو آزاد کیا"

صلى الله عليه وآله وسلم
سَلَّمَ عَلَيَّ عَشْرًا فَكَانَتْ بَا عَطَقَ رَقَبَةً

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَبِيرِ
صَلُّوا عَلَيَّ عَشْرًا فَكَانَتْ بَا عَطَقَ رَقَبَةً





اللَّهُ

دुआ رद्द نہیں کی جاتی

الدُّعَاءُ بَيْنَ الصَّلَاتَيْنِ لَا يُرَدُّ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “دو (2) دُروودوں کے درمیان مانگی جانے والی دُعا رद्द نہیں کی جاتی”

(الشفاء، 2/66)

فرمانِ آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ:
الدُّعَاءُ بَيْنَ الصَّلَاتَيْنِ لَا يُرَدُّ -

یعنی: دو دُروودوں کے درمیان مانگی جانے والی دُعا رُد نہیں کی جاتی۔

21-9-2017
الحمد لله
صوت

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَبِيرَ
صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



اللّٰهُ

آگ میں داخِل نہیں ہوگا

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ لَمْ يَلِجِ النَّارَ

فرمانے آخِرِی نَبِیِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : "جُو مُذْرَآءِ پَر دُرُودِے پَاك بھِجِےگَا وَوھِ
آگ مِی دَاخِل ن ہِوگَا"

(بِسْتَانِ الْوَاَعْظِمِیْنَ لِابْنِ جَوْزِی، ص 418)

فَرْمَانِ آخِرِی نَبِیِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :
مَنْ صَلَّى عَلَيَّ لَمْ يَلِجِ النَّارَ -

۱۶-۶-۲۱
ذوالحجہ ۱۴۴۲ھ
صباح ۱۰ بجے
۱۶-۶-۲۱

یعنی: "جو مجھ پر درودِ پاک بھیجے گا
وہ آگ میں داخل نہ ہوگا۔"

صلوات علیٰ الحَبِیْبِ
صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

اللَّهُ

جہنم سے 500 برس دور

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ مَرَّةً تَزَحَّزَحَتِ النَّارُ عَنْهُ مَسِيرَةَ خُسْبَانَةٍ عَامٍ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : "جس نے مڈھل پر اڪ سؤ (100) مرلربا دुरूد شرف پڌه وه جهنم سے 500 برس كى مسافت (يانى فاسيله كے برابرب) دूर كر ديا जाएगा ।"

(بستان الواعظين لابن جوزى، ص 411)

فرمان آخري نبى صلى الله عليه وآله وسلم : "جس نے مجھ پر ايد سو مرتبہ درود شريف پڑھے وه جھم سے 500 برس كى مسافت (يعنى فاصلے كے برابر) دور كر ديا

جائے گا۔"

اعمال شريف 6/114
1-1-8
صلى الله عليه وآله وسلم
ملا نبي
تسوية

صلوات على ابيبي
صلى الله على محمد



اللّٰهُ

हरम की 10 नेकियां

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ مِنْ أُمَّتِي كُتِبَتْ لَهُ عَشْرُ حَسَنَاتٍ مِّنْ حَسَنَاتِ الْحَرَمِ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ
وَمَا حَسَنَاتِ الْحَرَمِ؟ قَالَ: الْحَسَنَةُ بِسَبْعِ مِائَةِ حَسَنَةٍ

फ़रमाने आखिरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “मेरा जो उम्मीती मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है उस के लिए हरम की नेकियों में से दस (10) नेकियां लिखी जाती हैं।” अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हरम की नेकियां क्या हैं ? फ़रमाया : “हरम की एक नेकी सात सौ (700) नेकियों के बराबर है।”

(ريستان الواعظين لابن جوزي، 397)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم : ”میرا جو اُمتی مجھ پر ایک بار درودِ پاک پڑھتا ہے اس کے لئے حرم کی نیکیوں میں سے دس نیکیاں لکھی جاتی ہیں۔“ عرض کی گئی :
یا رسول اللہ! (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) حرم کی نیکیاں کیا ہیں؟ فرمایا: ”حرم کی ایک نیکی

سات سو (700) نیکیوں کے برابر ہے۔“

۱- الصوت -
۲- نغز
۳- خواف
۴- صبر
۵- حیا
۶- عفت
۷- تقویٰ
۸- شکر
۹- صبر
۱۰- صبر

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَبِيْبَ
صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدًا

اللَّهُ

سب کو اچھے انداز میں جواب دیا جاتا ہے

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ فِي شَرْقٍ وَلَا غَرْبٍ إِلَّا اللَّهُ وَمَلَائِكَتُهُ يُرَدُّ عَلَيْهِ بِأَلَّتِي هِيَ أَحْسَنُ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “مشرق و مغرب میں جو مسلمان مومن پر سلام بھیجے، اللہ پاک اور اس کے فرشتے اسے اس سے اچھے انداز میں جواب دیتے ہیں۔”

(لسان المیزان لابن حجر عسقلانی، 5/341)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: ”مشرق و مغرب میں جو مسلمان
مجھ پر سلام بھیجے، اللہ پاک اور اس کے فرشتے اسے اس سے اچھے انداز

میں جواب عطا فرماتے ہیں۔“

21-7-24
مقام شریف آباد
محمد علی صاحب
رحمۃ اللہ علیہ

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَبِيبِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



اللہ

10000
DUROOD E PAK

ہزار دُروُدے پاک پڑھنے کی فِزِیلت

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ الْفَأَزَاحَتْ كَتِفُهُ كَتِفِي عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ

فرمانے آخِرِی نبی صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جو مُذَّہ پر ہزار بار دُروُدے پاک بھیجتا ہے
جَننات کے دروازے پر وہ میرے کتفے کے ساتھ کتفا میلائے ہوگا ।

(القول البدیع، ص 242)

فرمانِ آخِرِی نبی صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ”جو کچھ ہزار ہزار بار دُروُدے پاک
بھیجتا ہے جَننات کے دروازے پر وہ میرے کتفے کے ساتھ
کتفا میلائے ہوگا۔“

کتفہ کتفی
صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ
ح ۱۰-۱۱

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَيِّبِ
صَلَّى اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



اللہ

فرشتا قیامت تک دُروُد بھجتا ہے

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً تَعْظِيمًا لِحَقِّي جَعَلَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ مِنْ تِلْكَ الْكَلِمَةِ مَلَكًا جَنَانًا لَهُ فِي الْمَشْرِقِ وَجَنَانًا لَهُ فِي الْمَغْرِبِ، وَرِجْلَاهُ فِي تَخُومِ الْأَرْضِ وَعُنُقُهُ مَلُومَى تَحْتَ الْعَرْشِ فَيَقُولُ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ: صَلِّ عَلَيَّ عَبْدِي كَمَا صَلَّيْتَ عَلَيَّ نَبِيِّي فَهُوَ يُصَلِّي عَلَيَّ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

فرمانے آخیری نبی ﷺ: “جو میرے حق کی تعظیم کرتے ہوئے مجھ پر دُروُد بھیجتا ہے، اللہ پاک اس سے ایک فرشتہ پیدا فرماتا ہے جس کا ایک بازو مشرق میں، دوسرا مغرب میں، دونوں پاؤں ساتویں زمین میں اور گردن عرش کے نیچے ہو گا ہے، اللہ پاک اسے فرماتا ہے تم میرے بندے پر اسی طرح دُروُد بھیجو جس طرح اس نے میرے نبی پر بھیجا۔ پس فرشتہ قیامت اسے بندے پر دُروُد بھیجتا رہے گا۔”

(الترغیب لابن شایبہ، ص 14)

فرمانے آخیری نبی ﷺ: “جو میرے حق کی تعظیم کرتے ہوئے مجھ پر دُروُد بھیجتا ہے، اللہ پاک اس سے ایک فرشتہ پیدا فرماتا ہے جس کا ایک بازو مشرق میں، دوسرا مغرب میں، دونوں پاؤں ساتویں زمین میں اور گردن عرش کے نیچے ہو گا ہے، اللہ پاک اسے فرماتا ہے تم میرے بندے پر اسی طرح دُروُد بھیجو جس طرح اس نے میرے نبی پر بھیجا۔ پس فرشتہ قیامت اسے بندے پر دُروُد بھیجتا رہے گا۔”

۱۸-۱۰-۸۱
۱۳۳۵ھ
۱۴۱۸ھ
۱۰-۱۰-۱۸
۱۳۳۵ھ
۱۴۱۸ھ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيَّ مُحَمَّدًا

اللّٰهُ

سوااب خاتم ن होगा

مَنْ كَتَبَ عَنِّيْ عَلِيًّا فَكَتَبَ مَعَهُ صَلَاةً عَلَيَّ
لَمْ يَزَلْ فِيْ أَجْرِ مَا قَرَأَ ذَلِكَ الْكِتَابِ

فرمانے آخیری نبی ﷺ : "جس نے میری طرف سے کوئی ہدیہ لکھی اور
اس کے ساتھ دُرود پاک بھی لکھا تو جب تک وہ ہدیہ شریف پڑھی جاتی رہے گی
دُرود شریف لکھنے والے کو سوااب ملتا رہے گا۔" (القول البدیع، ص 461)

فرمانِ آخری نبی ﷺ:

"جس نے میری طرف سے کوئی حدیث لکھی اور اس کے ساتھ حججہ پر
دُرود پاک بھی لکھا تو جب تک وہ حدیث شریف پڑھی جاتی رہے گی
دُرود شریف لکھنے والے کو ثواب ملتا رہے گا۔"

۱۱-۱۱
۱۳
۲۰-۶
۱۴۴۵ھ
۱۱-۱۱

صلوٰ علیٰ النبیب
صلی اللہ علیہ وسلم

اللّٰهُ

دُأا کی ہفاجت کا جریا

صَلَاتُكُمْ عَلَيَّ مُخْرِزَةٌ لِّدُعَائِكُمْ وَمَرْضَاةٌ لِّرَبِّكُمْ وَزَكَاةٌ لِّلْأَعْمَالِكُمْ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “تُمھارا مؤڈ پر دُرودے پاک پڈنا تُمھاری دُأاؤں کی ہفاجت کرنے والا اور تُمھارے رببے پاک کی رجا کا باڈس اور تُمھارے آمال کی پاکیجگی کا سبب ہے !”

(القول البدیع، ص 270)

فرمانِ آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ”تمھارا مجھ پر

دُرود پاک پڑھنا تمھاری سڈی ڈوں کی جفاقت کرنے والا اور تمھارے

رب پاک کی رضا کا باعث اور تمھارے اعمال کی پاکیزگی کا سبب ہے۔“

صوت
۱۵
۱۶
۱۷
۱۸
۱۹
۲۰
۲۱
۲۲
۲۳
۲۴
۲۵
۲۶
۲۷
۲۸
۲۹
۳۰
۳۱
۳۲
۳۳
۳۴
۳۵
۳۶
۳۷
۳۸
۳۹
۴۰
۴۱
۴۲
۴۳
۴۴
۴۵
۴۶
۴۷
۴۸
۴۹
۵۰
۵۱
۵۲
۵۳
۵۴
۵۵
۵۶
۵۷
۵۸
۵۹
۶۰
۶۱
۶۲
۶۳
۶۴
۶۵
۶۶
۶۷
۶۸
۶۹
۷۰
۷۱
۷۲
۷۳
۷۴
۷۵
۷۶
۷۷
۷۸
۷۹
۸۰
۸۱
۸۲
۸۳
۸۴
۸۵
۸۶
۸۷
۸۸
۸۹
۹۰
۹۱
۹۲
۹۳
۹۴
۹۵
۹۶
۹۷
۹۸
۹۹
۱۰۰

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَرِيمِ
صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



بہت بڑا فریشتا

إِنَّ لِلَّهِ مَلَكَ لَهُ جَنَاحَانِ أَحَدُهُمَا بِالشَّرْقِ وَالْآخَرُ بِالمَغْرِبِ فَإِذَا صَلَّى العَبْدُ عَلَى حُبِّا انْعَسَسَ فِي المَاءِ ثُمَّ يَتَنَفَّضُ فَيَخْلُقُ اللهُ مِنْ كُلِّ قَطْرَةٍ مِنْهُ مَلَكَا يَسْتَغْفِرُ لِدَلِكِ البُصَلِيِّ عَلَى الِى يَوْمِ القِيَامَةِ

فرمانے آخیری نبی ﷺ: "اللہ پاک کا ایک فریشتا ہے کہ اس کا ایک بازو مشرق میں اور دوسرا مغرب میں ہے، جب کوئی شخص عجمہ پر صحت کے ساتھ درود بھیجتا ہے وہ فریشتہ پانی میں غوطہ لگا کر اپنے پر جھاڑتا ہے، اللہ پاک اس کے پروں سے ٹپکنے والے پر پر قطرے سے ایک ایک فریشتہ پیدا کرتا ہے، وہ فریشتہ قیامت تک اس درود پڑھنے والے کے لئے استغفار (یعنی دعائے مغفرت) کرتے ہیں۔"

(القول البدیع، ص 251)

فرمان آخیری نبی ﷺ: "اللہ پاک کا ایک فریشتہ ہے کہ اس کا ایک بازو مشرق میں اور دوسرا مغرب میں ہے، جب کوئی شخص عجمہ پر صحت کے ساتھ درود بھیجتا ہے وہ فریشتہ پانی میں غوطہ لگا کر اپنے پر جھاڑتا ہے، اللہ پاک اس کے پروں سے ٹپکنے والے پر پر قطرے سے ایک ایک فریشتہ پیدا کرتا ہے، وہ فریشتہ قیامت تک اس درود پڑھنے والے کے لئے استغفار (یعنی دعائے مغفرت) کرتے ہیں۔"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اِنَّ لِلّٰهِ مَلَكَ
لَهُ جَنَاحَانِ
اَحَدُهُمَا
بِالشَّرْقِ
وَالْآخَرُ
بِالمَغْرِبِ
فَاِذَا صَلَّى
العَبْدُ
عَلَى حُبِّا
انْعَسَسَ
فِي
المَاءِ
ثُمَّ
يَتَنَفَّضُ
فَيَخْلُقُ
اللهُ
مِنْ
كُلِّ
قَطْرَةٍ
مِنْهُ
مَلَكَا
يَسْتَغْفِرُ
لِدَلِكِ
البُصَلِيِّ
عَلَى
الِى
يَوْمِ
القِيَامَةِ

صلو علی الحبیب
صلی اللہ علیہ وسلم

اللہ

اُجیبو گریب परिन्दा

مَنْ عَطَسَ فَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ مَا كَانَ مِنْ حَالٍ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ
عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ أَخْرَجَ اللَّهُ مِنْ مَمْنَعِهِ الْأَيْسِرَ طَائِرًا يَقُولُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَائِلِهَا

فرمانے آخیری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم : जिस نے छींक आने पर येह कहा :

“الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ مَا كَانَ مِنْ حَالٍ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ”

तो अल्लाह पाक उस के बाएं नथने (नाक के उलटे सूराख) से एक परिन्दा निकालता है जो
कहता है ऐ अल्लाह पाक ! इस कहने वालो की मगफिरत फ़रमा ।

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: جس نے چھینک آنے پر یہ کہا:

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ مَا كَانَ مِنْ حَالٍ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَهْلِ

بَيْتِهِ - تو اللہ پاک اُس کے بائیں نتھنے (یعنی بائیں اٹے سوراخ) سے ایک پرندہ

نکالتا ہے جو کہتا ہے: "اے اللہ پاک! اس نے والے کی مغفرت فرما۔"

۱۱۴۴ھ
۲۵-۷-۲۰۱۴
صالح علی الحبيب
صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
۱۱۴۴ھ

صلو علی الحبيب
صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم



رہمت کے دروازے खुल जाएंगे

إِذَا فَرَغَ أَحَدُكُمْ مِنْ طُهُورِهِ فَلْيَقُلْ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ
وَرَسُولُهُ ثُمَّ لِيُصَلِّ عَلَيَّ فَإِذَا قَالَ ذَلِكَ فَتَحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الرَّحْمَةِ

فرمانے آخیری نبی ﷺ : “جب تم میں سے کوئی وضو سے فارغ ہو تو :

”أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ“

پڑھے پھر مسجود پر درود شریف پڑھے جب وہ یہ پڑھے گا اس کے لیے

”خول دیے جائیں گے۔“

(القول البدیع، ص 342)

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم :- ”جب تم میں سے کوئی وضو سے فارغ

ہو تو: ”أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ“

پڑھے پھر مسجود پر درود شریف پڑھے، جب وہ یہ پڑھے گا اس کے لیے

رحمت کے دروازے کھول دیئے جائیں گے۔“

صوت
۲۵
۱۰
۱۱
۱۲
۱۳
۱۴
۱۵
۱۶
۱۷
۱۸
۱۹
۲۰
۲۱
۲۲
۲۳
۲۴
۲۵
۲۶
۲۷
۲۸
۲۹
۳۰
۳۱
۳۲
۳۳
۳۴
۳۵
۳۶
۳۷
۳۸
۳۹
۴۰
۴۱
۴۲
۴۳
۴۴
۴۵
۴۶
۴۷
۴۸
۴۹
۵۰
۵۱
۵۲
۵۳
۵۴
۵۵
۵۶
۵۷
۵۸
۵۹
۶۰
۶۱
۶۲
۶۳
۶۴
۶۵
۶۶
۶۷
۶۸
۶۹
۷۰
۷۱
۷۲
۷۳
۷۴
۷۵
۷۶
۷۷
۷۸
۷۹
۸۰
۸۱
۸۲
۸۳
۸۴
۸۵
۸۶
۸۷
۸۸
۸۹
۹۰
۹۱
۹۲
۹۳
۹۴
۹۵
۹۶
۹۷
۹۸
۹۹
۱۰۰

صلوات علی الحبيب
صلی اللہ علی محمد

[اللہ]

موناڤکرت سے پاک دقل

مَنْ صَلَّى عَلٰى مُحَمَّدٍ طَهَّرَ قَلْبُهُ مِنَ النِّفَاقِ كَمَا يُطَهَّرُ الثُّوبَ الْمَاءُ

ڦرمانے آخړری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : "مُحَمَّد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) پر جو دुरूده پاک پڢه اُس کا دقل موناڤکرت سے اےسا پاک هو जाएगा जैसे कपड़ा पानी से پاک هو जाता है ।"

(كشف الغم، 1/327- القول البدیع، ص 277)

فرمانِ آخړی نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ:

"محمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) پر جو درود پاک پڑھے اُس کا دل مُنَافَقَت سے ایسا پاک ہو جائے گا جیسے کپڑا اپنی سے پاک ہو جاتا ہے۔"

موسم
الربیع الثانی
السنه ۱۴۴۰ھ
۲۰۱۹

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد



اللَّهُ

لوگوں کے دلوں میں مہربانی پیدا ہوگی

مَنْ قَالَ: "صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ" فَقَدْ فَتَحَ عَلَى نَفْسِهِ
سَبْعِينَ بَابًا مِنَ الرَّحْمَةِ وَالْقَى مَحَبَّتَهُ فِي قُلُوبِ النَّاسِ
فَلَا يَبْغِضُهُ إِلَّا مَنْ فِي قَلْبِهِ نِفَاقٌ

جو کہے : صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ مُسْتَفَا مِرْمَانِے

صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

اس نے 70 دروازے رحمت کے اپنے اوپر کھول لیے، اللہ پاک اس کی
مہربانی لوگوں کے دلوں میں ڈالے گا کہ اس سے بغض نہ رکھے گا
کہ اس کے دل میں نفاق ہوگا۔

(كشَفُ الثُّمَّةِ، 1/327)

فرمانِ آخری نبی صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: جو کہے: صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
اس نے 70 دروازے رحمت کے اپنے اوپر کھول لیے اللہ پاک اس کی
محبت لوگوں کے دلوں میں ڈالے گا کہ اس سے بغض نہ رکھے گا
مگر وہ جس کے دل میں نفاق ہوگا۔

مگر وہ جس کے دل میں نفاق ہوگا۔
24-7-2014
مگر وہ جس کے دل میں نفاق ہوگا۔
مگر وہ جس کے دل میں نفاق ہوگا۔

اللّٰهُ

اस्सी سال کی عبادت

مَنْ صَلَّى صَلَاةَ الْعَصْرِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَقَالَ قَبْلَ أَنْ يَقُومَ
مِنْ مَقَامِهِ: "اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ
وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ تَسْلِيمًا" ثَمَانِينَ مَرَّةً غُفِرَتْ لَهُ ذُنُوبُ ثَمَانِينَ
عَامًا وَكُتِبَتْ لَهُ عِبَادَةُ ثَمَانِينَ سَنَةً

فرمانے آخیری نبی ﷺ : "صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ" :
"جس نے جمعہ کے دن نماز اِصْر ادا کی پھر اپنی جگہ سے اُٹھنے سے پہلے
80 بار یہ دُرود شریف پڑھا :

"اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ تَسْلِيمًا"
تو اس کے 80 برس کے گناہ بکھر جاتے اور اس کے لیے 80
سال کی عبادت لکھی جاتی ہے۔

(أَفْضَلُ الصَّلَاةِ لِلنَّبِيِّ، ص 25)

فرمانِ آخری نبی ﷺ : جس نے جمعہ کے دن لازِعِ صَرَادِ اِکِ
پھر اپنی جگہ سے اُٹھنے سے پہلے 80 بار یہ دُرود شریف پڑھا :

"اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ تَسْلِيمًا" تو اس کے
80 برس کے گناہ بخشے جاتے اور اس کے لیے 80 سال کی عبادت لکھی جاتی ہے۔

25-
26-
27-
28-
29-
30-
31-
32-
33-
34-
35-
36-
37-
38-
39-
40-
41-
42-
43-
44-
45-
46-
47-
48-
49-
50-
51-
52-
53-
54-
55-
56-
57-
58-
59-
60-
61-
62-
63-
64-
65-
66-
67-
68-
69-
70-
71-
72-
73-
74-
75-
76-
77-
78-
79-
80-
81-
82-
83-
84-
85-
86-
87-
88-
89-
90-
91-
92-
93-
94-
95-
96-
97-
98-
99-
100-

صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ
وَعَلَى آلِهِ
وَصَحْبِهِ
وَسَلِّمْ تَسْلِيمًا



جنت میں جگہ دیکھ لے گا

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ أَلْفَ مَرَّةٍ، لَمْ يَمُتْ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : "مذھر پر جو جمعہ کے دن ہزار بار درود پاک پاک پڑھے گا وہ اس وقت تک نہیں مرے گا جب تک جنت میں اپنی جگہ نہ دیکھ لے۔"

(أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ لِلنَّبِيِّ، ص 25)

فرمانِ آخیری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: "جمعہ پر جو جمعے کے دن ہزار بار درود پاک پڑھے گا وہ اس وقت تک نہیں مرے گا جب تک جنت میں اپنی جگہ نہ دیکھ لے۔"

اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ
ہر مسلمان کو جنت میں اپنی جگہ
میں دیکھنے کی توفیق فرمائے۔
- ص 25 -





سب سے جیّادا ہوں کس کے لیے ؟

أَكْثَرُكُمْ أَزْوَاجًا فِي الْجَنَّةِ أَكْثَرُكُمْ صَلَاةً عَلَيَّ

فرمانے آخیری نبی ﷺ : “جنت میں سب سے جیّادا ہوں اس شخص کو
میلےگی جو میں پر سب سے جیّادا درود پڑھنے والا ہوگا ।”

(أَفْضَلُ الصَّلَاةِ لِلنَّبِيِّ، ص 25)

فرمانِ آخری نبی ﷺ : “جنت میں سب سے زیادہ حوریں
اس شخص کو ملیں گی جو محمد پر سب سے زیادہ درود پڑھنے والا ہوگا۔”

10-11-12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000

صلوات علیٰ الحبيب
صلی اللہ علیہ وسلم

اللّٰهُ

کبھی اُجّاب نہیں دےتا

إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيَنْظُرُ إِلَى مَنْ يُصَلِّي عَلَيَّ وَمَنْ نَظَرَ اللَّهَ تَعَالَى إِلَيْهِ لَا يُعَذِّبُهُ أَبَدًا

فرمانے آخِرِی نبی صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : “جو شَخْصِ مُذَّجِ پَر دُرُودِ شَرِیْفِ پڑھتا ہِے اَللّٰہِ پَاکِ اُسِ پَر نَظَرِے رَہْمَتِ فَرْمَا تَا ہِے اُورِ جِیْسِ پَر اَللّٰہِ پَاکِ نَظَرِے رَہْمَتِ فَرْمَاے اُسے کبھی اُجّاب نہیں دےتا ۔”

(أَفْضَلُ الصَّلَاةِ لِلنَّبِيِّ، ص 40)

فرمانِ آخِرِی نبی صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : ”جو شخص مجھ پر درود شریف پڑھتا ہے، اللہ پاک اُس پر نظرِ رحمت فرماتا ہے اور جس پر اللہ پاک نظرِ رحمت فرمائے

اُسے کبھی عذاب نہیں دیتا۔“

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰی اٰلِهِ وَسَلَّمَ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ
۱۰-۱۵-۲۰

صَلُّوا عَلَيَّ الْجَبِیْبِ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْ مُحَمَّدٍ



اللہ

باڈ سے مگفیرت دुरूد شریف

إِنَّ مَنْ قَالَهَا وَكَانَ قَائِمًا غُفِرَ لَهُ قَبْلَ أَنْ يَقْعُدَ وَإِنْ كَانَ قَاعِدًا غُفِرَ لَهُ قَبْلَ أَنْ يَقُومَ
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ

فرمانے آخیری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “جس نے یہ دुरूدے پاک پڑھا :

“اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ”

اگر خڑا تھا تو بٹھنے سے پہلے اور بٹھا تھا تو خڑے ہونے سے پہلے اس کی مگفیرت
کر دی جائے گی۔” (سعادة الدارين، ص 244)

فرمانِ آخری نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : “جس نے یہ دُرودِ پاک پڑھا:
“اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ” اگر کڑا تھا تو بٹھنے سے
پہلے اور بیٹھا تھا تو کھڑے ہونے سے پہلے اس کی مغفرت کر دی جائے گی۔”

29-
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ
مَدِينَةُ الْمَدِينَةِ
مَدِينَةُ الْقَدِيقِ
مَدِينَةُ الْمَدِينَةِ

صلو علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

ہفت روزہ 317
WEEKLY BOOKLET 317

تہذیبِ امیر اہل سنت قرطابہ 3



از بعینِ عطار

امیر اہل سنت کے قلم شریف سے لکھی ہوئی
40 احادیثِ مبارکہ



الحمد للہ اس رسالے میں امیر اہل سنت کی تقریباً 34 سال
پرانی تحریر بھی شامل ہے

پبلسر
المہذبۃ للعلوم
Islamic Research Center

दुरूदे पाक की दुआ

इरशादे आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ : बेश दुरूद सरवरे अ़ालम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिए दुआ है और जिस क़दर इस के फ़वाइदो बरकात मुसल्ली (यानी दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले) पर अ़ाइद होते हैं हरगिज़ हरगिज़ अपने लिए दआ में नहीं बल्कि उन के लिए दुआ तमाम उम्मते मर्हूमा के लिए दुआ है कि सब उन्हीं के दामने दौलत से वाबस्ता हैं।

(फ़ज़ाइले दुआ , स. 230)